हिंदी अनुवादक:
पादरी विजय पाल सिंह
पाठ 6, अगस्त 08,
2026 के लिए
आत्मिक वरदान

"प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक
वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष
करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।"
(1 कुरिन्थियों 14:1)

यह स्पष्ट है कि कुरिन्थ की कलीसिया विभिन्न मुद्दों पर विभाजित थी। वे प्रचारकों के विषय में, भोजन करने के तरीके के विषय में, विवाह करने या अविवाहित रहने के विषय में, और इस बात पर कि कौन-सा आत्मिक वरदान सबसे अधिक सम्मानित होना चाहिए—इन सब बातों पर आपस में असहमत थे।

जब पौलुस इन प्रारंभिक समस्याओं का उत्तर दे चुका, तब उसने दिखाया कि आत्मिक वरदान किस प्रकार समस्या बनने के बजाय एकता का साधन बन सकते हैं (1 कुरिन्थियों 12–14)।

सबसे श्रेष्ठ वरदान कौन-सा है? कोई भी नहीं! क्यों?

आत्मिक वरदान:

- अनेक वरदान, देनेवाला एक।
- अनेक अंग, देह एक।

एकता का आधार:

- प्रेम की सर्वोच्चता।

विशेष वरदान:

- भाषाओं का वरदान।
- भविष्यद्वाणी का वरदान।

आत्मिक वरदान

अनेक वरदान, देनेवाला एक

"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है" (1 कुरिन्थियों 12:4)

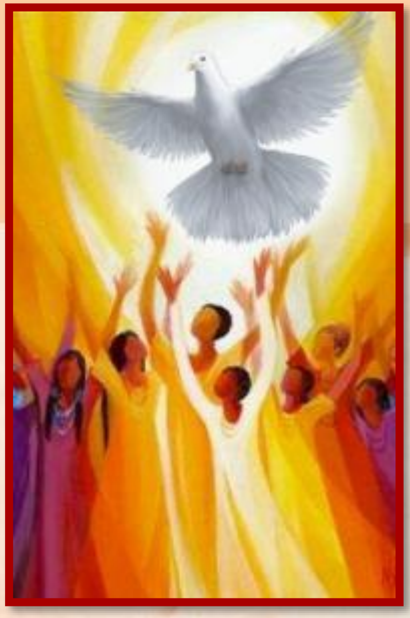

आत्मिक वरदान कौन देता है? (1 कुरिन्थियों 12:4-6)

1 कुरि. 12:4	विभिन्न प्रकार के	वरदान	परन्तु वही एक	आत्मा
1 कुरि. 12:5		सेवकाइयाँ		प्रभु
1 कुरि. 12:6		कार्य		परमेश्वर

आत्मिक वरदान — देनेवाला

आत्मिक वरदानों और उनके देनेवाले के बीच संबंध को समझाने के लिए, पौलुस उनकी विविधता पर बल देते हुए तीन शब्दों का उपयोग करता है: वरदान, सेवकाइयाँ, और कार्य।

परन्तु देनेवाला एक ही है: [पवित्र] आत्मा; प्रभु [यीशु]; और परमेश्वर [पिता]। अर्थात्, ईश्वरत्व पूर्ण एकता में कार्य करता है (यूहन्ना 14:16)।

परमेश्वर वरदान उसी प्रकार नहीं देता जैसा यूनानी-रोमी "देवता" देते थे (1 कुरिन्थियों 12:2)। इसमें न तो कोई परमानंद धार्मिक अवस्था होती है, और न ही वरदान पानेवालों का कोई पदानुक्रम के आधार पर चयन किया जाता है (जैसे, उदाहरण के लिए, पुजारिनों का)।

अनेक वरदान, देनेवाला एक

"वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है" (1 कुरिन्थियों 12:4)

परमेश्वर अलग-अलग लोगों को अलग-अलग वरदान क्यों देता है? (1 कुरिन्थियों 12:7)

आत्मिक वरदान कलीसिया के "लाभ" के लिए दिए जाते हैं। केवल परमेश्वर ही जानता है कि कौन-सा व्यक्ति किसी विशेष वरदान का उपयोग उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए कर सकता है।

पौलुस उन अनेक वरदानों में से किन-किन वरदानों का उदाहरण देता है जो अस्तित्व में हैं? (1 कुरिन्थियों 12:8-10; रोमियों 12:6-8; इफिसियों 4:11-12)

1 कुरिन्थियों 12:8-10	रोमियों 12:6-8	इफिसियों 4:11-12
बुद्धि की बातें	सेवा करना	प्रेरिताई
ज्ञान की बातें	शिक्षा देना	सुसमाचार प्रचारक
विश्वास	उपदेश देना	पासबानी और उपदेशक
चंगाई	उदारता	
सामर्थ्य के काम	अगुआई	
भविष्यद्वाणी	दया करना	
आत्माओं की परख		
भाषाएँ		
भाषाओं का अर्थ बताना		

अनेक अंग, देह एक

“क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।” (1 कुरिन्थियों 12:12)

परमेश्वर एक है, परन्तु ईश्वरत्व का प्रत्येक सदस्य अपना-अपना विशिष्ट कार्य करता है। उसी प्रकार, कलीसिया भी एक है, परन्तु उसका प्रत्येक सदस्य पृथ्वी पर मसीह की देह के एक अंग के रूप में अपना-अपना कार्य करता है (1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

पौलुस कलीसिया की तुलना मानव शरीर से करते हुए विविधता में एकता को स्पष्ट करता है। आँख के पास देखने का “वरदान” है, परन्तु कान के पास नहीं। फिर भी, दोनों मिलकर कार्य करते हुए एक-दूसरे के पूरक बनते हैं। इसी प्रकार, कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति अपने प्राप्त वरदानों के अनुसार अपना कार्य करता है (1 कुरिन्थियों 12:28-30)।

इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक है; कोई भी दूसरे से बड़ा नहीं है; प्रत्येक को दूसरों के कल्याण की चिंता करनी चाहिए; और प्रत्येक को कलीसिया की एकता के लिए कार्य करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 12:15-27)।

एकता का आधार

प्रेम की सर्वोच्चता

“तुम बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।” (1 कुरिन्थियों 12:31)

प्रेम कोई वरदान नहीं है, बल्कि “सबसे उत्तम मार्ग” है (1 कुरिन्थियों 12:31)। यह विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का फल है (गलातियों 5:22)। आत्मिक वरदानों का उचित उपयोग केवल प्रेम के द्वारा ही किया जा सकता है।

यदि प्रेम न हो, तो भाषाओं का वरदान केवल “ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ” है। यदि प्रेम न हो, तो भविष्यद्वाणी का वरदान, ज्ञान का वरदान, और विश्वास का वरदान कुछ भी नहीं हैं। यदि प्रेम न हो, तो उदारता का वरदान और यहाँ तक कि शहीद होने का बलिदान भी व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 13:1-3)।

1 कुरिन्थियों 13:4-7 आत्मिक वरदानों के प्रयोग में उचित आचरण के लिए एक दृढ़ मार्गदर्शिका प्रदान करता है:

प्रेम क्या करता है	प्रेम क्या नहीं करता
धीरजवन्त है।	डाह नहीं करता।
कृपालु है।	अपनी बड़ाई नहीं करता।
सत्य से आनन्दित होता है।	घमण्ड नहीं करता।
सब बातें सह लेता है।	अनरीति नहीं चलता।
सब बातों की प्रतीति करता है।	अपनी भलाई नहीं चाहता।
सब बातों की आशा रखता है।	झुँझलाता नहीं।
सब बातों में धीरज धरता है।	बुरा नहीं मानता।
	कुकर्म से आनन्दित नहीं होता।

विशेष वरदान

भाषाओं का वरदान

“इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।” (1 कुरिन्थियों 14:13)

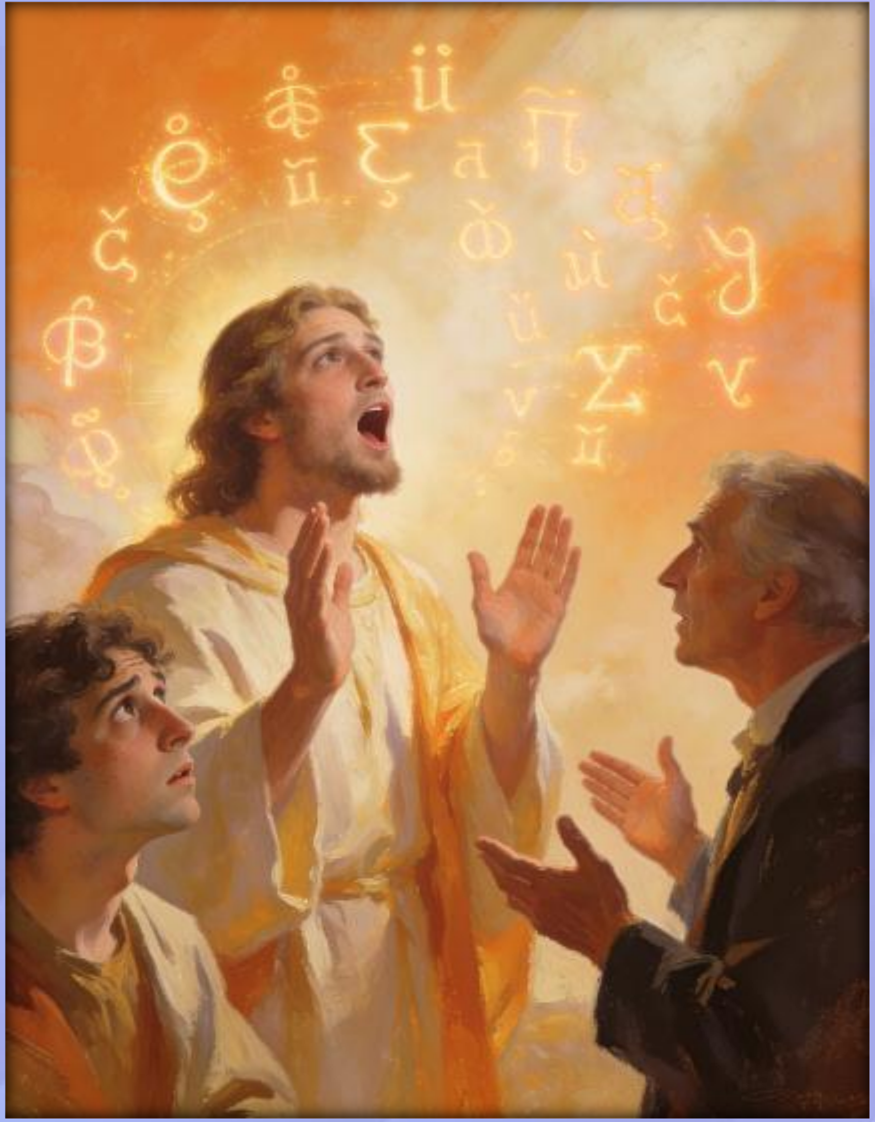

भाषाओं के वरदान और उसके उचित उपयोग पर पौलुस का विशेष बल इस बात को दर्शाता है कि कुरिन्थ की कलीसिया के कुछ सदस्य इस वरदान का दुरुपयोग कर रहे थे, जिसके कारण सार्वजनिक आराधना में अव्यवस्था और भ्रम उत्पन्न हो रहा था (1 कुरिन्थियों 14:23)।

भाषाओं का वरदान उस भाषा में बोलने की सामर्थ्य है जो बोलने वाले के लिए पहले से अज्ञात हो, चाहे वह मनुष्यों की भाषा हो या स्वर्गदूतों की (1 कुरिन्थियों 13:1)। जब यह भाषा सुनने वालों के लिए अज्ञात हो, तो उसका अर्थ बताना आवश्यक होता है (प्रेरितों के काम 2:8; 1 कुरिन्थियों 14:2, 13-14, 27-28)।

पौलुस की यह इच्छा कि सब लोग भाषाएँ बोलें, कुछ लोगों ने इस अर्थ में गलत समझ ली है कि प्रत्येक विश्वासी के पास यह वरदान होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:5)।

वास्तव में, यह अभिलाषा सभी आत्मिक वरदानों को समाहित करती है (1 कुरिन्थियों 14:1)। पौलुस पहले ही स्पष्ट कर चुका था कि “किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।” (1 कुरिन्थियों 12:7)। इसलिए, सभी लोगों को एक जैसे वरदान प्राप्त नहीं होते।

भविष्यद्वाणी का वरदान

“परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।” (1 कुरिन्थियों 14:3)

हमें भविष्यद्वाणी के वरदान को केवल भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने तक सीमित नहीं करना चाहिए। भविष्यद्वाणी के वरदान का मुख्य उद्देश्य उन्नति, प्रोत्साहन और शान्ति देना है (1 कुरिन्थियों 14:3) I:3).

पौलुस इस वरदान पर अन्य वरदानों की अपेक्षा अधिक बल देता है (1 कुरिन्थियों 14:1, 4, 22-25)। परन्तु वह यह भी आग्रह करता है कि इसका उपयोग उचित रीति से किया जाए ताकि कोई भ्रम उत्पन्न न हो: “सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ।” (1 कुरिन्थियों 14:40; साथ ही 1 कुरिन्थियों 14:29-33 देखें)।

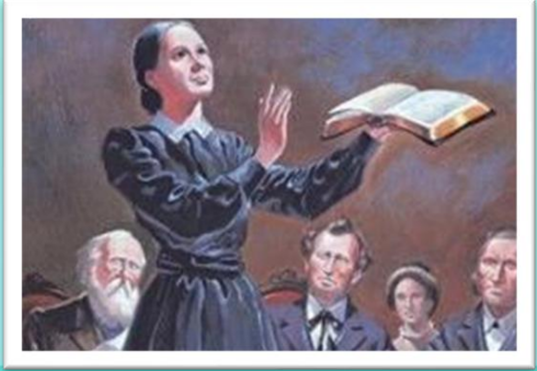

शेष कलीसिया के एक विशिष्ट वरदान के रूप में, इसका विशेष प्रकट होना एलेन जी. व्हाइट के जीवन और सेवकाई में दिखाई देता है (प्रकाशितवाक्य 12:17; 19:10)। परन्तु हम किसी सच्चे भविष्यद्वक्ता को कैसे पहचान सकते हैं?

यदि भविष्य में होने वाली जिन घटनाओं की घोषणा की गई है—और यदि वे शर्तों पर आधारित नहीं हैं—तो उनका पूरा होना आवश्यक है (व्यवस्थाविवरण 18:22; यिर्मयाह 28:8-9; योना 4:2)।

उसका संदेश पहले के भविष्यद्वक्ताओं के संदेश के अनुरूप होना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 13:1-3; यशायाह 8:20)।

उसे यीशु के देहधारण की गवाही देनी चाहिए (1 यूहन्ना 4:1-3)।

उसका जीवन उस बाइबल के संदेश के अनुरूप होना चाहिए जिसका वह प्रचार करता है (मत्ती 7:15-20)।

“परमेश्वर की समस्त व्यवस्था में स्त्री-पुरुषों को विभिन्न प्रकार के वरदान देने की योजना से अधिक सुंदर और कुछ नहीं है। कलीसिया उसकी वाटिका है, जो अनेक प्रकार के वृक्षों, पौधों और फूलों से सुशोभित है। वह यह अपेक्षा नहीं करता कि जूफ़ा देवदार के समान बड़ा हो जाए, या जैतून का वृक्ष ऊँचे खजूर के समान ऊँचा हो जाए। बहुत-से लोगों ने केवल सीमित धार्मिक और बौद्धिक शिक्षा प्राप्त की है, फिर भी यदि वे नम्रतापूर्वक उस पर भरोसा रखते हुए कार्य करें, तो परमेश्वर के पास उनके लिए भी एक कार्य है जिसे उन्हें पूरा करना है...”

“अलग-अलग लोगों को अलग-अलग वरदान इसलिए दिए जाते हैं कि कार्यकर्ता एक-दूसरे की आवश्यकता को अनुभव करें। परमेश्वर ये वरदान अपनी सेवा के लिए देता है; न कि उन्हें पानेवाले की महिमा के लिए, न ही मनुष्य को ऊँचा उठाने के लिए, बल्कि संसार के उद्धारकर्ता की महिमा करने के लिए। इनका उपयोग समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए, ताकि सत्य का प्रतिनिधित्व हो, न कि असत्य की गवाही दी जाए।”

ई जी व्हाइट (तुम सामर्थ पाओगे, 1 जुलाई)